

जैन बौद्ध तत्वज्ञान।

सम्पादक व प्रकाशकः–
जैनधर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्र० सीतलप्रसाद,
व्यवस्थापक, आत्मधर्म संमेलन, चन्दावाड़ी–सूरत।



प्रथमावृत्ति] वीर सं० २४६० [प्रति १०००

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस–सूरतमें मूलचंद किसनदास कापडियाने मुद्रित किया।

मूल्य–बारह आना।

प्रकाशकका वक्तव्य ।

इस ग्रंथके प्रकाश करनेका हेतु यह है कि जगतकी हि भाषा ज्ञाता विद्वन्मंडलीको इस बातका निश्चय कराया जावे । प्राचीन जैनधर्म और बौद्ध धर्ममें किस तरहसे साम्यता है । उभ दर्शनोंके माननीय ग्रन्थोंके आधारसे दोनोंकी समता प्रदर्शित करने काम ग्रंथोंके वाक्योंको दे कर किया गया है ।

यह भी उचित समझा गया कि इस ग्रन्थको अधिकतर भेट देकर प्रचार किया जावे जिससे शीघ्र ही इस तत्वका प्रकाश हो ज कि जैन और बौद्ध तत्वज्ञान एक है। सागरमें जब मैंने सन् १९३ में वर्षाकाल व्यतीत किया था तब ही यह ग्रंथ वहां लिखा गया था

वहां दिहली निवासी धर्मात्मा लाला मिट्टनलाल लालचंदज अग्रवाल दिगम्बर जैनका फर्म है । यह भारतके प्रसिद्ध बीड़ी व्यापारी हैं । आपसे इस ग्रन्थके प्रकाशनके लिये कहा गया। आप सहर्ष ग्रन्थके मुद्रणका व प्रकाश होनेका खर्च देना स्वीकार किया इस उदारताके लिये वे धन्यवादके पात्र हैं। जो कोई इस ग्रंथको खर दना चाहें उनके लिये इस पुस्तकका दाम बहुत अल्प सिर्फ बार आना रक्खा गया है। पुस्तक विक्रीसे जो दाम आवेगा वह पुस्त दान खाते ही जमा किया जायगा जिससे और भी पुस्तकोंका दा किया जा सके । यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी है, हरएक तत्वखोजीव पढ़कर लाभ उठाना चाहिये ।

अगास
(आनन्द)
२३-९-१९३४

ब्रह्मचारी सीतलप्रसाद, व्यवस्थापक
आत्मधर्म सम्मेलन, चंदावाड़ी-सूरत ।

संक्षिप्त परिचय-

लाला रामजीदासजी-देहली।

इस पुस्तकको अपने ज्ञान दानसे प्रकाश कराने वाले वयोवृद्ध लाला रामजीदासजी जैनी हैं। जिनकी आयु ७० वर्षकी है। आपका चित्र इस पुस्तकके साथ है। शहर दिहली सदर बाजारमें लाला रामजीदास एंड कम्पनीका प्रसिद्ध फर्म है। आपको जैन धर्मसे व उद्योग व व्यापारसे बहुत प्रेम है। आपने अपने गाढ़ परिश्रमसे स्वदेशी उद्योगकी आशातीत उन्नति करके यह दिखला दिया है कि जैन समाज पश्चिमीय व्यापारियोंसे किसी तरह पीछे नहीं है।

सन् १९२१ दिसम्बरमें जब देहलीमें इन्डियन नेशनल कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन हुआ था उस समय लाला साहबके दिलमें स्वदेश प्रेम ऐसा जागृत हुआ कि आपने सोचा कि कोई ऐसी स्वदेशी चीज तय्यार की जावे जिससे विदेशमें भारतका पैसा जाना बन्द हो और भारतीय भाई व बहिनोंको आजीविकाका साधन मिले।

वर्तमान जगतकी वायुके अनुसार भारतमें भी सिगरेट पीनेका बहुत रिवाज़ होगया था। विदेशोंसे लाखों रुपयोंकी सिगरेट भारतमें आती और भारतका पैसा विदेशमें जाता था व भारतीय कंगाल होते थे। तब आपने यही निश्चय किया कि स्वदेशी बीड़ी तैयार कराके विक्रय की जावे। पहले आपने कुछ मध्यप्रांतके बीड़ी बनानेवालोंकी एजंसी ली और बीड़ीका प्रचार पंजाब व युक्तप्रांतमें करना प्रारम्भ किया। परन्तु कतिपय भारतीयोंके भीतर कुछ ऐसी कमजोरी है कि पहले तो वे माल अच्छा देते हैं फिर खराब देने लगते हैं, इस दोषके कारण इनको व्यापारमें सफलता नहीं हुई। तब आपने विचार किया

कि स्वयं कारखाने खोलकर ठीक माल तैयार करना चाहिये और सचाईके साथ विक्रय करना चाहिये तब ही सफलता होगी। सत्यसे ही विश्वास जमता है और विश्वाससे ही व्यापार चमकता है।

तब प्रवीण लाला रामजीदासने अपने उत्साही सुपुत्र मिट्ठनलालजी और लालचंदजीको मध्यप्रांतमें भेजा कि वे वहां कारखाने खोलकर अपनी देखभालमें अच्छा माल तैयार करावें। धर्मात्मा और उद्योगी भाइयोंने पिताकी आज्ञानुसार कारखाने खोले और अपनी बीड़ीका नाम पानका इक्का रखा। इस नामकी बीडीको पबलिकने बहुत ही पसन्द किया और इसका प्रचार इतना बढ़ा कि इस फर्मकी तरफसे आजकल सागर, दमोह, कटनी, खुरई, गढ़ाकोटा आदिमें बहुतसे कारखाने खुले हुये हैं जिनमें हजारों गरीब भाई बहन बीडी बनाकर अपना उदर पोषण करते हैं। सचाई व सफाईसे व्यापार करनेके कारण इनको व्यापारमें बहुत लाभ हुआ। धर्म प्रेम होनेके कारण उन्होंने अपने धनको उपयोगी ज्ञान दान आदिमें खरचना अपना कर्तव्य समझा। आप जैन समाजकी तन, मन, धनसे अच्छी सेवा करते हैं, देहलीका हीरालाल जैन हाईस्कूल व अन्य संस्थाओंको आवश्यक अच्छी मदद देते हैं तथा सागर व दमोहकी जैन संस्थाओंको भी अच्छी सहायता देते रहते हैं। आपके उद्योगसे लाखों रुपया विदेश जाना बंद हो गया व भारतीयोंको लाभ हुआ। आपका परिचय बताता है कि जैन व्यापारियोंको स्वदेशी मालकी उन्नतिमें उद्योगशील होना चाहिये। आपने जो उचित दान इस पुस्तक प्रकाशनके लिये दिया है उसके लिये हम कृतज्ञ हैं।

—प्रकाशक।



श्रीमान् लाला रामजीदासजी–देहली।

[इस ग्रंथके दानी महोदय]

'Jain Vijaya' Press, Surat.

शुद्धाशुद्धि।

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
भू० ९	१२	४९ वर्ष	४२ वर्ष
११	१०	समण	समण कहते हैं
,,	१९	इन्द नियस	डालानियस
१२	२३	मोगोत	मोगोल
१३	अंत	Litle	Title
१९	१९	Hade	Had
१७	६	Riso	Rise
,,	१७	सभ्यता	समता
,,	२०	१२ वें	११ वें
२१	१३	Sonsora Nervel	Sansara Narad
४	१	मयमेख	भयभैरव
,,	१४	विपित्तं	पि चित्तं
६	११	भावकी	कायकी
,,	१९	भग्गो	मग्गो
७	१	व्रत्तं	वुत्तं
८	२	तीन....	ति न मण्णति
,,	४	पहिनिस्सगा	पटिनिस्सग्गा
,,	९	वढामीति	वदामीति
९	११	बन्धप्रसंगेन	बन्धप्रसंगो न
११	३	ग्राव	घाव
१३	२	अव्यापज्झ	अब्यापज्झ
१९	२	Incomporable	Incomparable
१६	१९	भागे मग्न है	जो निमग्न है

१८	११	श्रूमि-मि मिच्चु	ब्रूमि मिच्चु
१९	४	Valition	Volition
,,	११	सभ्यता	समता
२१	१०	Leaving	Living
२५	८	अह	अट्ट
२९	१	त्यक्तं	व्यक्तं
३२	१९	मनकी	न मनकी
३३	४	अपनेको	अपनेसे
३५	१४	समुदथ	समुदय
३६	अंत	येय मगवा	येन मगवा
३७	१०	युट्ठो	पुट्ठो
४०	१५	धम्मदीया	धम्मादीपा
४१	१	आदिय	अदिय
४३	१४	संखाए	संखारा
४६	२०	सलापतनवग्गे	सलायतनवग्गो
४७	२०	अरणतयो मतानि	अण्णतमोअत्त नि
४९	१	Than	Then
,,	२	quich	quick
,,	३	wn away	blown away
५२	३	As	us
५५	२०	life	left
५६	अंत	He	He exists or
६१	१७	ज्ञान	ज्ञानघन
६४	४	बाह्य	ब्रह्म
६७	१८	सुत्यक्त	सुव्यक्त

७२	२	अप्प	अप्पा
८०	२१	संकप्पलायो	संकप्पलापो
”	”	अमिज्झा	अभिज्झा
”	”	आपोदा	व्यापादो
८३	१३	आयं	अयं
”	१५	निक्खेयो	निक्खेपो
८५	१९	कोत्थ	फोत्थ
८६	६	संकस्सजा	संफस्सजा
”	८	कस्स	फस्स
९०	१९	मानानुसयं	मानानुसयं
”	”	सम्मूहनिला	समूहनि त्वा
९९	४	निधि	विधि
१०४	१३	So	Which is so great
१०९	२१	होता है	मालूम होता है
११५	१७	जप	जय
११६	२२	यहीयंति	पहीयंति
”	२४	असवा दस्सता	आसवा दस्सना
११९	१६	उप्पज्जे खुं	उप्पज्जेय्युं
१२०	१२	संकस्सानं	संफस्सानं
१३३	१३	सुदु सहावं	सुद्धु सहावं
१३४	१	बुज्मि	बुज्झि
१३६	१२	मोहरूपी	मोक्षरूपी
१४२	१६	ब्रह्मचर्या	बुद्धचर्य्या
”	२३	आति है	आर्ति है
१४४	४	जलती	चलती

१४७	२०	Though	Through
१५५	१९	पूर्व	सूर्य
१६८	१४	श्लोकर्न आर्त्त मनता	श्लोकैर्मात्तमनता
१६९	८	उठना	न उठना
१७०	६	परस्प	परस्य
,,	२१	महायोग	महाभोग
१७२	१०	अहिंसासे	हिंसासे
१७३	३	फरुसा	फरुसा
,,	४	सम्फध्यलापा	सम्फफलापा
१७७	१०	अंतंग	अंतरंग
,,	१८	निर्जरा	निर्वाण
१८०	२२	Inentifying	Identifying
१८२	६	अमि घर्म	अभिधर्म
१८५	१९	साद्बुद्ध	स्याद्बुद्ध
१८६	१७	स्यानपि	न्यानपि
१८७	११	मांसभक्ष्यं	मांसमभक्ष्यं
१९२	११	र्माषादिव	र्माषभि
,,	१७	लंकावार	लंकावतार
१९५	९	स्त्रावय	सार
२०२	१७	एक मुक्त	एक भुक्त
२१४	११	लीओ	लोओ
,,	११	मुडो	फुडो
,,	१७	लाल	ताल
२१७	१०	Crewling blings	Crawling beings
२१८	१९	ज्ञानभ्यास	ज्ञानाभ्यास
२२०	७	वचनों	बन्धनों

सम्मति-पं० अजितप्रसादजी वकील एम. ए. एल एल. बी.
भूतपूर्व जज हाईकोर्ट बीकानेर।

जैन-बौद्ध तत्वज्ञान।

इस पुस्तकको मैंने उस समय भी देखा था जब श्री जैनधर्म-भूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने उसे मेरे पास छपनेके लिये छोड़ दी थी; और अब फिर छपी हुई यह पुस्तक मैंने आद्योपांत पढ़ी।

इसके पढनेसे यह विचार जो चिरकालसे मेरे मनमें स्थान पारहा था दृढ़ होगया। ब्रह्मचारीजीने बीसियों बौद्ध और जैन ग्रन्थोंके वाक्योंको उद्धृत करके, और उनपर तुलनात्मक दृष्टिसे सूक्ष्म विचार करके यह सिद्ध कर दिया है कि इन दोनों धर्मोंमें ऐसा अन्तर तथा विरोध नहीं है जैसा सामान्यतया समझा जाता है।

एक समय था जब कि विद्वानोंने भिन्नर धर्मोंमें पारस्परिक विरोधको बढानेका प्रयत्न किया, धार्मिक ग्रन्थोंको नष्ट किया, धार्मिक तत्वोंको अर्थका अनर्थ करके दिखलाया, जैनोंको नास्तिक, बौद्धोंको क्षणिक, निर्वाणको अभाव कह दिया, खेद है कि वह भावना आजकल भी कुछ संकुचित हृदय विद्वानोंमें चली आरही है, जो सांप्रदायिक विरोधको बढाना ही अपना धर्म समझते हैं। किंतु समयमें शुभ परिवर्तन होगया है, और अधिकतर विद्वानोंका विचार धर्मसमन्वयकी ओर है।

ब्रह्मचारीजी सीलोनके विद्यालंकार कालिज केलेनियामें एक मास ठहरे। रंगूनमें बौद्ध मंदिरोंका निरीक्षण किया। वहां और अन्य स्थानोंमें बौद्ध विद्वानोंसे तात्विक चर्चा की। पाली भाषाकी बौद्ध पुस्तकों और उनके अंग्रेजी अनुवादोंको पढ़ा, और इस प्रकार खोज, अध्ययन और अनुभव करके उन्होंने यह पुस्तक तय्यार की।

इस पुस्तकमें ब्रह्मचारीजीने यह सिद्ध कर दिया है कि गौतम

बुद्धने २९ सालकी उमरमें घर छोड़ा। पहले दिगम्बर जैन मुनिका चारित्र ग्रहण किया और दुर्धर तपश्चरण किया, फिर उन्होंने ऐसे चारित्रको अनावश्यक या दुस्साध्य समझकर वस्त्र सहित साधुचर्या चलाई। जैसी कि श्वेतांबर जैन साधुओंकी प्रवृत्ति है। तात्विक दृष्टिसे विचार करनेपर यह झलकता है कि जीव तत्वके ध्रुव रूप अस्तित्वमें और शाश्वत मोक्षकी प्राप्तिमें बौद्ध और जैनागममें विरोध नहीं है। बौद्ध साहित्यमें निर्वाणको "नाश" वा "अभाव" रूप नहीं कहा है, बल्कि ज्ञानमय, नित्य, अमर, तृष्णा रहित, विशुद्ध, केवल, अमूर्तीक, जन्मरहित जीव अवस्था रूप कहा है। बौद्ध ग्रंथोंमें यह तो स्पष्ट देखनेमें नहीं आया कि मुक्तात्मा पुरुषाकार ध्यानमय सिद्धक्षेत्रमें लोकके शिखरपर अनंतकालके लिये विराजित है। किन्तु तात्विक सिद्धांत तो आत्माका स्वरूप है न कि उसका आकार वा स्थिति स्थान। मोक्ष मार्ग और कर्म विपाक, कर्म सिद्धांत, अहिंसा धर्मके विवेचनमें तात्विक अंतर विशेष नहीं है। केवल शाब्दिक भेद है। बौद्ध वाक्योंमें दिखलाया है कि स्थावर व त्रसकी रक्षा करे, देखकर चले; घासको न रोंदे, रात्रिको भोजन न करे। लंकावतार सूत्रके आधारपर बौद्धोंके यहां मांसाहार मना है तथापि उनमें मांसाहारका प्रचार होरहा है, यह खेदकी बात है। बौद्ध विद्वानोंको विचार करके मांसाहारके प्रचारको बंद करना चाहिये, जिससे बौद्धधर्म पर धब्बा लगता है। और जैन साहित्यका अध्ययन करके बौद्ध वाक्योंका मन्तव्य समझना चाहिये। पुस्तक समयोपयोगी, लाभदायक, शिक्षाप्रद और विचारोत्पादक है।

अजिताश्रम–लखनऊ
ता० १४–६–३४

अजितप्रसाद।

भूमिका।

पाली भाषाका कुछ बौद्ध साहित्य देखनेसे तथा पाली भाषाके बौद्ध ग्रंथोंके इंग्रेजीमें उल्था पढ़नेसे व स्वतंत्र लिखित इंग्रेजीमें बौद्ध पुस्तकोंको देखनेसे मुझे यह प्रतीत हुआ कि प्राचीन बौद्ध मतके सिद्धांत जैन सिद्धांतसे बहुत मिल रहे हैं। बौद्ध विद्वान साधुओंसे वार्तालाप करनेके निमित्त मैं सीलोन गया और वहां विद्यालंकार कालेज केलेनियामें एक मास ता० १४ मईसे ता० १३ जून सन १९३२ तक ठहरा तथा कई स्थानोंमें घूमकर वहांका अनुभव प्राप्त किया। बहुतसा विषय श्रीयुत बौद्ध साधु आनन्द कोसल्यापन और बुद्धचर्याके कर्ता श्रीयुत राहुल सांकृत्यायनसे मिलकर प्राप्त किया। मेरे मनमें उत्कंठा हुई कि मैं जैन तत्वज्ञान व बौद्धतत्वज्ञानको प्रत्येकके ग्रंथोंके वाक्य देकर मुकाबला करके दिखलाऊं। जिससे पाठकोंको दोनोंकी साम्यताका पता चले। जहांतक मैंने बौद्धोंके निर्वाण और निर्वाणके मार्गका अनुभव करके विचार किया है तो उसका बिलकुल मिलान जैनियोंके निर्वाण और निर्वाणके मार्गसे होजाता है। इस पुस्तकको भले प्रकार पढ़नेसे यह बात पाठकोंको ज्ञात होजायगी। पाठक देखेंगे कि गौतमबुद्धने गृह त्याग करनेपर कुछ कालतक दिगम्बर जैन मुनिका बाहरी चारित्र पाला था, फिर अपना मध्यम मार्ग प्रगट किया। सवस्त्र साधुका मार्ग चलाया–सिद्धांत एक ही रक्खा। बौद्धका जो कुछ प्राचीन साहित्य प्रथम शताब्दीका लिखा पाली भाषाका मिलता है, उसमें चारित्र सम्बन्धी वर्णन विशेष है जिन बातोंमें अनुमान प्रमाणकी आवश्यक्ता होती है व न्यायशास्त्रकी शरण लेनी पड़ती है, उन बातोंको गौतम बुद्धने पूछनेवालोंको व्याख्यान करनेसे निषेध कर दिया जैसे आत्मा क्या है, निर्वाण क्या है,

मरणके पीछे क्या होता है। इन बातोंका वर्णन दूसरे ढंगसे किया है जिससे किसीसे वादविवाद तो हो नहीं और समझनेवाले स्वयं समझ जावें और निर्वाणके लिये उद्योग कर सकें। हमें तो ऐसा अनुमान होता है कि जैसे जैनोंमें एक सिद्धांत मानते हुए भी दिगम्बर व श्वेताम्बर दो भेद पड़ गए हैं, उसी तरह श्री महावीर स्वामीके समयमें ही वस्त्र सहित साधुचर्या स्थापित करनेसे बौद्ध संघ जैन संघसे पृथक् होगया। और जैसा पाली साहित्यसे प्रगट है, गौतमबुद्ध व महावीरस्वामीमें परस्पर अनमेल दिखलानेवाले बहुतसे सूत्र हैं परन्तु इन सूत्रोंमें जैसा अनमेल दिखाया गया है वह जैन साहित्यको देखनेसे अनमेल नहीं ठहरता है किंतु मेल होजाता है। हम नीचे उन सूत्रोंके कुछ नाम देते हैं जिनमें श्री भगवान महावीरका कथन निग्गंथ नात्तपुत्तके नामसे कहा गया है। प्रथम शताब्दीमें जब बौद्ध साहित्य लिखा गया तब जैन और बौद्धमें कैसा परस्पर ईर्षा भाव या द्वेष था इसका यह नमूना है—

बुद्धचर्यामेंसे—सूत्रोंके नाम नीचे प्रकार हैं—

(१) पृ० ९१–(जटिल) सुत्त (सं० नि० ३–१–१) राजा प्रसेनजित कौशल भगवानसे बोले–“हे गौतम! वह जो श्रमण ब्राह्मण संघके अधिपति, गणाधिपति, गणके आचार्य, ज्ञाता, यशस्वी, तीर्थङ्कर बहुत जनोंद्वारा साधु-सम्मत हैं जैसे निगंठनाटपुत्त (निर्ग्रंथ ज्ञातपुत्र)।

(२) पृ० ११०–अभिवंधक पुत्त-सुत्त–(अं० नि० अ० क० २–४–९) तथा (सं० नि० ४०–१–९)

एक समय कोसलमें चारिका करते हुए बड़े भारी भिक्षुसंघके साथ भगवान जहां नालिन्दा है वहां पहुंचे....उस समय बड़ी भारी निगंठो (जैन साधुओं)की परिषद्के साथ निगंठ नाटपुत्त (महावीर) नालंदा हीमें वास करते थे।

(३) पृ० १४८ सीहसुत्त (अं० नि० ८, १, २, २)—

"एक समय भगवान वेशालीमें थे....उस समय निगंठों (जनों) का श्रावक सिंह सेनापति उस सभामें बेठा था....तब सिंह सेनापति जहां निगंठ नाथपुत्त थे वहां गया।

सिंह ! तुम्हारा कुल दीर्घकालसे निगंठोंके लिये प्याउकी तरह रहा है। उनके जानेपर पिंड न देना ऐसा मत समझना।

(४) पृ० २२८ चूळदुःख खन्ध सुत्त (म०नि० १: २: ४)

"एक समय में राजगृहके गृद्धकूट पर्वतपर विहार करता था उस समय बहुतसे निंगठ (जैन साधु) ऋषिगिरिकी काल शिलापर खड़े रहनेका व्रत ले तीव्र वेदना झेल रहे थे।

निंगठो ! तुम क्यों वेदना झेल रहे हो ? तब उन निगंठोंने कहा—" निंगठ नातपुत्त (जैन तीर्थंकर महावीर) सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, आप अखिल ज्ञान दर्शनको जानते हैं। चलते, खड़े, सोते, जागते, सदा निरंतर (उनको) ज्ञान दर्शन उपस्थित रहता है।

(५) पृ० २६५—महासुकुलुदायि-सुत्त-(म० नि० २: ३: ७)

"राजगृहमें वर्षावासके लिये आए हैं। निगंठ नाथ-पुत्त।"

(६) पृ० २८० चूळ सुकुलदायि सुत्त—म० नि० २-३-९)

कौन हैं—सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, निखिलज्ञानसम्पन्न होनेका दावा करते हैं। भंते—निगंठनाथपुत्त।

(७) पृ० ३४१ देवदहसुत्त (म० नि० ३: १: १)

उन निगंठोंने मुझे कहा " निगंठनातपुत्त सर्वज्ञ सर्वदर्शी अखिल ज्ञानदर्शनको जानते हैं।"

(८) पृ० ४४५—उपालिसुत्त-(म० नि० २: २: ६)

उस समय निगंठ नातपुत्त निगंठों (जैन साधुओं) की बड़ी परिषद्के साथ नालंदामें विहार करते थे।

उपालीसे भगवान बुद्ध कहते हैं–"दीर्घकालसे तुम्हारा कुल निगंठोंके लिये प्याउकी तरह रहा है। उनके जानेपर पिंड नहीं देना चाहिये यह मत समझना।" "भगवान तो मुझे निगंठोंको भी दान करनेको कहते हैं।" "दीर्घतपस्वी निगंठ जहां **निगंठ नाथपुत्त** थे वहां गया।

(९) पृ० ४९६ **अभयराजकुमारसुत्त** (म० नि० ९: १: ८)
अभयराजकुमार जहां निगंठ नातपुत्त थे वहां गया।

(१०) पृ० ४९९ **सामजलफलसुत्त** (दी० नि० १: १: २)
किसीने कहा–" **निगंथ नात पुत्त** "

(११) पृ० ४८१–**सामगामसुत्त** (ब० नि० २: १: ४)
(विक्रम पूर्व० ४२८)–एक समय भगवान शाक्यदेशमें सामगानमें विहार करते थे। उस सयय **निगंठनाथ-पुत्त** (जैन तीर्थंकर महावीर) अभी अभी पावासे निर्वाण हुये।

नोट–इस समय गौतमबुद्धकी आयु (५०५जन्मबुद्ध–४२८)=७७ वर्षकी थी, उनकी पूर्ण आयु ८० वर्षकी थी।

(१२) पृ० ५२०–**महापरिनिव्वाणसुत्त** (दी० नि० २:३:१६)
"प्रसिद्ध यशस्वी तीर्थंकर **निगंठ नातपुत्त** "

(१३) **मज्झिमनिकाय चूल सारोपम सुत्त** (३०)
"ये इमे भो गोतम समण ब्राह्मणासंघिनो गणाचरिया ज्ञाता यसस्सिनो तित्थकरा साधुसम्मता बहुजनस्स सेय्यथिदं-**निगंठो नाथपुत्तो**।

(१४) **दीर्घनिकाय** पृ० २९ **पसादिक सुत्त**—
"एकं समयं भगवा सक्केसु विहरति–तेन खोपन समयेन **निगंठो नाथपुत्तो** पावायं अधुना कालकतो होति (श्रीमहावीरका निर्वाण हुआ)

(१५) **मज्झिमनिकाय** महासच्चिकसुत्त (३६)
सच्चिकनिग्गंथपुत्तो महावनं उपसंकामि।

" निगंथं नाथपुत्तं वादेन" ।

इन उल्लेखोंसे यह भी पता चलता है कि गौतमबुद्धके समयमें निर्ग्रंथ मतके अनुयायी दीर्घकालसे प्रचलित थे तथा महावीर स्वामीको तीर्थंकर व सर्वज्ञ लोक कहते थे । जैसे आजकल जहां दिगम्बर हैं वहां श्वेताम्बर जैन हैं वैसे उस प्राचीनकालमें जैन बौद्धका साथ२ प्रचार था । बुद्धचर्या पृ० ९७७ से प्रगट होता है कि राजा अशोकके पुत्र महेन्द्र सीलोनमें बुद्ध निर्वाणके २३६ वें वर्ष विक्रम पूर्व १९० में गए थे । विदित होता है कि या तो वहां पहलेसे निग्रन्थ मत (जैन मत था) या महेन्द्रके साथ साथ जैन मत प्रचारक भी वहां गए होंगे, क्योंकि बौद्ध ग्रन्थ महावंशसे पता चलता है कि अनुराधापुरमें निर्ग्रंथ साधु थे व निर्ग्रंथ लोग थे। बौद्धानुयायी एक राजाने उनसे रुष्ट हो उनको हटाकर उनके देवस्थानके स्थानपर अपना विहार बनवाया । पालीके वाक्य नीचे प्रकार हैं—

महावंश अध्याय ३३—

वासितो व सदा आसी एकवीसति राजसु ।
तं दिस्वान पलायंतं निगंठो गिरिनामको ॥ २ ॥
पलायति महाकाल सीहलोति भुसं रवि ।
तं सुतान महाराजा सिद्ध मम मनोरथे ॥
विहारं एत्था कारेस्सं इच्चेवं चितई तदा ।
पाठिकं दमिलं हत्वा सयं रज्जं अकारई ॥
ततो निगंठारामं तं विद्धं सेत्वा महीपतिः ।
विहार कारई तस्स द्वादसपरिवेणिकं ॥

भावार्थ—इकवीसवें राजकुमार सीलोनके अनुराधापुरमें राज्य करते थे। गिरि नामके किसी निर्ग्रंथने भागते हुए देखकर ज़ोरसे कहा कि महाकाल सिंहल भागे जारहे हैं । यह सुनकर महाराजा सिंहलने

ऐसा मनमें विचार कर लिया कि यदि मेरा मनोरथ सिद्ध होगया (मैं जीत गया) तो यहीं विहार बनवाऊँगा। दाठिकदमिलको मारकर स्वयं राज्य करने लगा तब उसने निग्रंथोंका स्थान विध्वंश करके बारह प्रवीणका विहार बनवाया।

नोट—यह बात सन् ई०से दूसरी शताब्दी पूर्वकी कही जाती है।

सीलोनमें किसी समय जैन थे यह बात ऊपरके कथनसे अवश्य सिद्ध होती है तथा यह भी सिद्ध होता है कि परस्पर प्रेम न था।

इस पुस्तकको पढ़नेसे पाठकोंको विदित होगा कि जिस सिद्धांतका पालीकी पुरानी पुस्तकोंमें कथन है उनका विस्तारसे वर्णन जैन साहित्यमें पाया जाता है। यदि जैन साहित्य पढ़ा जावे तो बौद्ध साहित्यका विशेष महत्व झलक जाता है।

आजकल प्रचलित बौद्धसे प्राचीन बौद्धमें कुछ भिन्नता थी ऐसा आधुनिक विद्वान मानते भी हैं। नीचे उनके कुछ वाक्य हैं—

(1) Sacred book of the East Vol. XI (1881).

Translated by T. W. Rys Davids from Pali, edited by Max Muller.

Intro. *Page 21*—Pali Suttas have preserved for us at least the belief of the earliest Budhists. The Budhists of India-as to what the original doctrines taught by Budhha himself had been.

Page 22—First record we have of the Budhist scriptures being reduced into writing is the well-known passage in **Dipa Vansa**, which speaks of their being recorded in books in Ceylone towards the beginning of the first century before the commencement of our era. Date of Dipa Vansa may be placed about 4th century A. D.

Budhism of Pali Pitakas is not only a quite different thing from Budhhism as hitherto commonly received, but is antogonistic to it.

Page 34—No record of his actual words could have been preserved. It is quite evident that the speeches placed in the Teacher's mouth, though formulated in the first person, in direct narrative, are only intended to be summaries and very short summaries of what was said on those occasions.

भावार्थ-पाली सूत्रोंने प्राचीनसे प्राचीन बौद्धोंके विश्वासको बतानेकी अवश्य रक्षा की है। भारतके प्राचीन बौद्धोंकी मूल शिक्षाएं क्या थीं जिनको स्वयं गौतमबुद्धने सिखाया था, इनमें हैं–पहले पहल हम दीपवंशमें यह प्रसिद्ध लेख पाते हैं कि बौद्धोंका साहित्य पुस्तक रूपमें सीलोनके भीतर प्रथम शताब्दी ईसासे पूर्व लिखा गया था। यह दीपवंश चौथी शताब्दीके अनुमानका ग्रन्थ माना जासक्ता है। इन पाली पिटकों (पिटारों) का बौद्धधर्म साधारण प्रचलित बौद्ध धर्मसे मात्र बिलकुल भिन्न ही नहीं है किन्तु उससे विरुद्ध है।

गौतमबुद्धके खास वाक्योंका कोई लेख सुरक्षित नहीं रक्खा जासका। यह बिलकुल साफ है कि जो भाषण गौतमबुद्धके मुखसे कहलाए गए हैं और प्रथम पुरुषमें मानों वे कह ही रहे हैं ऐसे दिखाए गए हैं वे मात्र बहुत कुछ संक्षेपमें उन बातोंको कहते हैं जो उन अवसरोंपर कही गई थीं—

II. The doctrine of the Buddha by george Grimm.

Preface:—The fixing of the Tipitaka in writing followed only a tew decades before beginning of the era under King Veltagāmini of Ceylone to which island canon was brought by Mihinda, the son of King Asoka. This definite fixing of Pali canon took place about 400 Years after Budha's death. The present work sets forth the original genuine teaching of the Budha.

भावार्थ–सन ई० से कुछ वर्ष पहले त्रिपिटकका लिखना सीलो-नके राजा वत्तगामिनिके नीचे हुआ। इस सीलोनमें ये सिद्धान्त

राजा अशोकके पुत्र महिन्द्र द्वारा लाया गया था। इससे सिद्ध है कि बुद्धके निर्वाणके ४०० वर्ष पीछे पाली सिद्धान्त लिखा गया। इस पुस्तकमें बुद्धकी असली मूल शिक्षाएं हैं।

नोट—इसीसे प्रगट है कि वर्तमानका बौद्ध पुराने बौद्धसे कुछ अंतर जरूर रखता है।

III. The life of the Budha by Edward J. Thomas M. A. (1927).

Intero. *Page 18*—As the authoritative teaching represented by the dogmatic utterances and discourses of the Founder were not recorded in writing, but were memorised by each school, differences inevitably began to appear.

Pali chronicles of Ceylon are corroborated in their main outlines by the puranic and Jain traditions. The chronological relations with general history have been determined by Sir William Jones that the Chandragupta of the chronicles and puranas is the sandrocotus of strabs and Justin. The Indian King who about 303 B. C. made a treaty with Selewcus Nacatia and at whose court Myasthenes resided some years as an ambassodar.

Page-204 They all agree in holding that primitive teaching must have been something different from what the earliest scriptures and commentators thought it was.

भावार्थ—क्योंकि बुद्धके प्रमाणिक उपदेश जिनको बुद्धका उपदेश कहा जाता है लिखे नहीं गए थे परन्तु हरएक स्कूल उसे कंठ कर लेता था। इसीसे पीछे अंतर दिखाई पड़ने लगा। सीलोनकी पाली कथाओंका मिलान पौराणिक व जैन कथाओंसे होता है। सर विलियम जोन्सने इतिहासके सम्बंधमें खोज करके कहा कि पुरानोंका चन्द्रगुप्त वही है जो स्ट्रेबो और जष्टिनका संद्रोकोटस है। इस महाराजाने सेल्युकस नेकेसियासे संधि करली थी। चन्द्रगुप्तके दरबारमें मेगस्थनीज एलची होकर कई वर्ष रहा।

इस बातमें सब सहमत हैं कि प्राचीन शिक्षा अवश्य उससे कुछ भिन्न है जो प्राचीन ग्रन्थ व उनकी टीकाएं बताती हैं। अब हमें यह देखना है कि जब जैन व बौद्ध सिद्धांत एक है मात्र बाहरी साधु चारित्रका अन्तर है कि निर्ग्रन्थ जैन साधु नग्न रहते थे जब कि बौद्ध साधुओंने वस्त्र स्वीकार किया था तब गौतम बुद्धने घर त्यागनेपर जो दिगम्बर जैन मुनिकी चर्या पाली थी उस समय श्री महावीर-तीर्थङ्करका उपदेश प्रारम्भ हुआ था या नहीं। यदि प्रारम्भ नहीं हुआ था तो यह मानना पड़ेगा कि महावीरस्वामीके उपदेशके पहले जैन धर्मका उपदेश प्रचलित था। बुद्धचर्या पृ० ४८१ सामगाम सुत्त म० नि० ३-१-४ से प्रगट है कि जब गौतम बुद्ध ७७ वर्षके थे तब महावीर स्वामीका निर्वाण ७२ वर्षमें हुआ था। जैन शास्त्रोंमें प्रगट है कि महावीर स्वामीने ४९ वर्षकी आयुतक अपना उपदेश नहीं दिया था। अंतिम ३० वर्ष उपदेश दिया अर्थात् जब गौतमबुद्ध ४७ वर्षके थे तब महावीर स्वामीका उपदेश प्रारम्भ हुआ। गौतमबुद्धने २९ वर्षकी आयुमें घर छोड़ा तथा ६ वर्ष पीछे अर्थात् ३५ वर्षकी आयुमें अपनी शिक्षा प्रारम्भ की। इससे प्रगट होता है कि महावीर स्वामीका उपदेश गौतमबुद्धके उपदेशके १२ वर्ष पीछे प्रारम्भ हुआ। तब २९ और ३५ वर्षके बीचमें जो दिगम्बर जैन मुनियोंका व्यवहार था वह महावीर स्वामीसे पहलेसे ही किसीके द्वारा प्रचलित था। नौमी शताब्दीके जैनाचार्य देवसेनजी दर्शनसारमें लिखते हैं कि गौतम-बुद्ध जैनियोंके २३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथके सम्प्रदायमें आए हुए श्री पिहिताश्रव मुनिके शिष्य हुए थे। इससे यह भी सिद्ध होता है कि २३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ महावीर स्वामीके निर्वाणके २५० वर्ष पूर्व निर्वाण जाचुके थे अर्थात् महावीर स्वामीके जन्मसे १७८ पूर्व निर्वाण प्राप्त कर चुके थे।

पार्श्वनाथ स्वामीका नाम किसी अन्य इतिहासमें व शिलालेखमें न मिलनेसे भले ही उनको ऐतिहासिक पुरुष न माना हो परन्तु यह तो सिद्ध है कि महावीरस्वामी तथा गौतमबुद्धके पहले जैनधर्म था, या यों कहिये कि प्राचीन बौद्ध धर्म था।

हमारी रायमें जैन व बौद्धमें कुछ भी अन्तर नहीं है। चाहे बौद्ध धर्म प्राचीन कहें या जैनधर्म प्राचीन कहें एक ही बात है। गौतम बुद्धने मात्र साधुकी चर्या सुगम की। सिद्धांत वही रक्खा जैसा इस पुस्तकके पढ़नेसे पाठकोंको ज्ञात होगा। गौतम बुद्धकी शिक्षाके पहले जैनमत था इसके उल्लेख हम नीचे देते हैं–

The life of the Budha by E. I. Thomas. (1927)

Intro.–*Page–74* Their were gymnosophists or naked saints in India, but they were not Buddhists

भावार्थ–प्राचीन कालमें भारतमें जैन सूफी या नग्न साधु थे। परन्तु वे बौद्ध न थे (अर्थात् वस्त्र सहित न थे)।

Ancient India as described by Magasthanes and Arrian (p. 877).

Page 104—Philosopy, then, with all its blessed advantages *to man, flourished long ago among the Indians, the* **gymnosophits.**

Page 105—Sarmanes called Germanes by strabo and Samaneuns by Parphyrius, are the ascedics of a different religion, and may have belonged to the sect of **Jina** or to another.

Page 115—When Alexander arrived at Taxila and saw the Indian gymonsophists (Jain Muni), a desise seized him to have one of these men brought into his presence; because he admired their endurance. The eldest of these sophists with whom the others lived as as disciples with a Master Daulamus by *name*, not only refused to go himsalf, but prevented the others going. He is said to have won over **Kalanus** one of the sophists of the place.

Page 122—Socrates speaks of the soul as at present confined in the body as in a species of prison. This was the doctrine of the Pythogorus, even in its most striking peculiarities bears such a close resemblance to the Indians as greatly to favour the supposition that it was directly borrowed from it. There was even a tradition that Pythogonas had visited India.

भावार्थ–प्राचीन भारतमें तत्वज्ञान मानवको सुखकारी लाभ देता हुआ जैन सूफी नामके भारतीयोंमें बहुत दीर्घकालसे फैला था। श्रमण जिनको ष्ट्रैबोंने जर्मन व परकीरपसने समण एक भिन्न धर्मके साधु हैं जो शायद जैनधर्मके या अन्य किसीके होसकते हैं।

जब सिकन्दर तक्षिलामें गया था तो उसने भारतीय जैन सूफियोंको (जैन साधुओंको) देखा था। उनकी सहनशीलताको उसने मान्य किया था और उनमेंसे एकको लेजानेकी इच्छा प्रगट की थी। इन साधुओंमें जो सबसे वृद्ध थे जिनके साथ दूसरे रहते थे वे इन्दनियस थे। उन्होंने स्वयं जाना स्वीकार न किया और न दूसरोंको जानेकी आज्ञा दी। तब सिकन्दरने उनमेंसे एक कालानस साधुको जानेको राजी कर लिया।

शुकरातने कहा है कि आत्मा वर्तमानमें उसी तरह शरीरमें कैद है जैसे कैदखानेमें। यह पैथोगोरसका सिद्धांत था जिसका तत्वज्ञान अपने आश्चर्यकारी भेदोंके साथ भारतीय तत्वज्ञानसे इतना अधिक मिलता है जिससे यह खयाल किया जाता है कि वह भारतसे लिया गया था। यह भी बात प्रसिद्ध है कि पैथोगोरसने भारतकी मुलाकात ली थी।

Science of comparative religions by Major General J. S. R. Forlong F. R. B. E. F. R. A. S. M. A. I. etc. (1897)

नामकी पुस्तकमें यह दिखलाया है कि जैन और प्राचीन बौद्ध

एक ही मत है तथा यह धर्म भारतमें व भारतके बाहर दीर्घकालसे फैला हुआ था। तथा इसहीका प्रभाव ईसाई धर्म, यहूदी धर्मपर पड़ा है।

Intro. *Page 14*—The selection of these short studies has enabled us to virtually embrace and epitomise all the faiths and religious ideas of the world, as well as, to lay bare the deep-seated taproot from which they sprang, viz, the crude yatism, Jati or ascetism of thoughtful Jatis or Jains, who in man's earliest ages have on all lands separated themselves from the world and dwelt upon pious motives in lonely forests and mountain caves.

भावार्थ-इस कुछ पठन-पाठनसे हमने दुनियांके सर्व विश्वास व विचारोंका विचार किया है तथा वे भाव कहांसे उठे उस जड़को ढूंढ़ा है तो कहना होगा कि वे भाव विचारशील जैन साधुओंसे उठे हैं। ये जैन साधु मानव अति प्राचीन कालमें सर्व पृथ्वीपर रहते थे जो संसार त्यागकर पवित्र उद्देश्यसे एकांत वनों व पर्वतकी गुफाओंमें वास करते थे।

Page-19 It is clear that the Gotam of early Tibetans, Mougals and Chinese must have been a Jain, for the latter say he lived in the 10th and 11th centuries B. C. Tibetans say he was born in 916, became a Budha in 881, preached from his 35th year and died in 831 B. C. which closely corresponds with the saintly Parsva.

भावार्थ—यह बात साफ है कि प्राचीन तिब्बतवासी, मोंगोल तथा चीनोंका गौतम अवश्य कोई जैन होना चाहिये क्योंकि चीन कहते हैं कि १० वीं तथा ११ वीं शताब्दी पूर्व था। तिब्बतवाले कहते हैं कि वह ९१६ में जन्मा था, ८८१ में बुद्ध हुआ। ३५ वें वर्षसे धर्मोपदेश दिया व ८३१ वर्ष पूर्व निर्वाण हुआ। यह वर्णन पार्श्वनाथ साधुसे करीब२ मिल जाता है।

Page 2—Through what historical channels did Budhism influence early christianity, we must widen the enquiry by making it embrace Jainism—the undoubtedly prior faith of very many millions through untold milleniums-though one little-known in Europe except to the few.

भावार्थ-कितने ऐतिहासिक द्वारोंसे बौद्धधर्मने प्राचीन ईसाई धर्मपर असर डाला इसकी यदि जांच की जावे तो यह पता चलेगा कि इसने जैनधर्मको स्वीकार किया, जो धर्म निश्चयसे अनगिनती सहस्रों वर्षोंसे करोड़ोंका प्राचीन मत रहा है। यद्यपि इस समय यूरुपमें कुछोंके सिवाय इसका ज्ञान नहीं है।

Page 23—So slight seemed to Asoka the difference between Jainism and Budhism that he did not think it necessary to make a public profession of Budhism till about his 12th reignal year (247 B. C.) so that nearly if not all his rock inscriptions are really those of a Jain sovereign"

भावार्थ-जैन और बौद्धके मध्यमें राजा अशोकको इतना कम भेद दिखता था कि उसने सर्व साधारणमें अपना बौद्ध होना अपने राज्यके १२वें वर्ष (२४७ वर्ष पूर्व) कहा था। इसीलिये करीब२ उसके कई शिलालेख वास्तवमें जैन सम्राट्के रूपमें हैं।

Page 28—From Aina-Akbari of Abul Fazl, it is clear that Asoka supported Jainism in Kashmir, when Vicery of Ujjain about 260 B. C., as had his father Bindusara and grandfather Chandragupta throughout Magadh Empire.

'Budhism was apparently for about a centure after Gotam's death thought by all who did not trouble themselves with details to be mere a form of Jainism. Amongst beyond these millions, Asoka laboured assidously to propogate his mild and kindly Jainism, especially the sacredness of life, as well as peace charity and universal botherhood. In all his rock-inscriptions he designates himself by favourite Jain title "Devanam priya."

भावार्थ—अबुलफज़लकी आईने-अकबरीसे यह साफ २ प्रगट है कि अशोकने काश्मीरमें जैनधर्मकी स्थापना की, जब वह उज्जैनका प्रबंधक था। २६० वर्ष पूर्व जब उसके पिता बिंदुसार व दादा चन्द्रगुप्तने मगध राज्यभरमें धर्मको फैलाया था। गौतमबुद्धके निर्वाणके १०० वर्ष पीछे बौद्धधर्मको वे सब लोग, जो सूक्ष्म भेदोंके जाननेका कष्ट नहीं उठाते थे, एक जैनधर्मका ही मात्र रूपक समझते थे। करोड़ों मानवोंके भीतर अशोकने बड़े परिश्रमसे नम्र और दयामय जैनधर्मका विस्तार किया। खासकर जीवकी पवित्रता शांति, दान और जगत मात्रसे भ्रातृभावको फैलाया। अपने सब शिलालेखोंमें उसने अपनेको जैनोंकी देवानांप्रिय उपाधिसे लिखा है—

This then was the theory and practice of the great Jaino—Budhist religion which flourished in India many centuries before and after the teaching of Gotam Sakya Muni... ...It was certainly long prior to Parsva and Mahavira......... Whilst India was certainly the fruitful centre of religion from 7th century B. C., yet Trans—Himalaya, Oxiana, Baktria and Kaspiana seem to have still earlier developed similar religious views and practices as Indian Jains and Budhist claims and almost historically show, that about a score of their saintly leaders perambulated the Eastern world long prior to 7th Century B. C. We may reasonably believe that Jains Budhism was very anciently preached by them from China to Kaspia. It existed in Oxiana and north of Himalayas 2000 years before Mahavira.

भावार्थ—यह इस महान् जैन बौद्ध धर्मका सिद्धांत तथा आचरण था जो भारतमें गौतम शाक्य मुनिके बहुतसी शताब्दियों पहले व पीछे फैला हुआ था। यह धर्म श्री पार्श्व और महावीरके बहुत पहलेसे था। जब भारत ७वीं शताब्दी पूर्वसे इस धर्मका वास्तवमें फैलता हुआ केन्द्र था। हिमालयके पार, ओक्सियाना, बैक्ट्रिया, कास्पि-

याना। इससे भी बहुत पहलेसे ऐसे ही धार्मिक सिद्धांत व आचरणमें उन्नति कर रहे थे जैसे भारतीय जैन और बौद्धोंके है। लगभग ऐतिहासिक दृष्टिसे यह प्रगट होता है कि सातवीं शताब्दी पूर्वसे बहुत पहलेसे २०से अधिक साधु तीर्थंकरोंने पूर्वीय संसारमें धर्मका प्रचार किया था। हम बहुत उचित रीतिसे विश्वास कर सकते हैं कि जैन बौद्ध धर्म बहुत ही प्राचीन कालसे उनके द्वारा चीनसे कास्पियन तक उपदेशित होता था। यह धर्म ओक्सियाना और हिमालयके उत्तर महावीरस्वामीसे २००० वर्ष पूर्व मौजूद था।

Page 32—In these moves, we see how Baktrian faith passed west and how in 7th and 6th centuries B. C. or earlier, Xalmoxis and Pythegories were preaching and teaching like the Butha—gurus of Jains and Budhists. Strabo says " They were a Thrakian sect who lived without wives—Their brethren the Maesi religiously abstained from eating any thing that hade life. Homer of 7th century B. C. or earlier called them most just men...livers on milks...devoid of desire for riches. John baptist, Jesus and their disciples are common examples of Essenick life in Asia. Josephus says the Essenick brethren like the ancient Durae neither married, drank wine, nor kept servants, living apart. They offer no sacrifices and teach immortality of the soul, as do Jains.

भावार्थ–इन आंदोलनोंमें हम देखते हैं कि किसतरह बेक्ट्रियाका मत पश्चिममें गया। और किस तरह सन् ई०से सात या छ शताब्दी पूर्व या इससे भी पहले शैलमोक्सि और पेथोगोरस जैन और बुद्ध गुरुओंके समान शिक्षा लेरहे थे।

स्ट्रेबो कहते हैं–वे थ्रेकिया जातिके थे जो विना स्त्रीके रहते थे। उनके भ्रातृगण मेसी धार्मिक रूपसे उस वस्तुको नहीं खाते थे जिसमें जीव हो। सातवीं शताब्दी पूर्व या उससे पहलेके होमर उनको बहुत

ही न्यायवान मानव कहते हैं। वे दूधपर रहते थे। धनकी कोई इच्छा न थी। जानवैंवेष्टि, जीसस जो उनके शिष्य साधु जीवनके साधारण दृष्टांत हैं जो एसियामें गए हैं। जोज़फस कहते हैं कि ये साधु ढाईकी तरह न तो शादी करते थे, न मदिरा पीते थे, न नौकर रखते थे, एकांतमें रहते हैं। वे बलि नहीं करते थे व जैनोंके समान आत्माका अमरत्व सिखाते थे।

Page 35 Xalmosis taught more than the Jain doctrine of the immortality of the soul.

Page 36 He thought the Indian doctrines of transmigration etc, and considered no animal should be injured—all having souls like men.

भावार्थ—शेलमोशिस आत्माका अमरत्व जो जैनसिद्धांत है उसीको सिखाते थे। वह पुनर्जन्मका भारतीय सिद्धांत बताते हैं और यह ध्यान था कि किसी पशुको कष्ट न दिया जावे, सबमें मानवोंके समान आत्मा हैं।

Page 40—The Savans of Alexander found Jaino—Budhism strongly in the ascendant throughout Baktria, Oxiana, and all the passes to and from Afghanistan and India.

भावार्थ—सिकन्दरके आदमियोंने जैन बौद्ध धर्मको वेक्ट्रिया, ओक्सियाना व अफगानिस्तान और भारतके बीचकी सर्व घाटियोंमें उन्नति रूपमें फैला हुआ पाया था।

Page 46—Aristotle saying (about 330 B. C.) that "Jews of Cale-syria, were Indian philosophers" called in the East Calani and Ikshvaku or Sugar-cane people and only Jews because they lived in India. These gews (evidently Essenes) derived from Indian philosophers wanderful fortitude in life, diet and continence. They were in fact Jain-Budhist, whom the great Greek confounded with syrians.

भावार्थ—अरस्तूने सन् ई०से ३३० वर्ष पूर्व कहा है कि काले-सीरियाके वासी यहूदी भारतीय तत्वज्ञानी थे जिनको पूर्वमें कालनी

और इक्ष्वाकुवंशी कहते थे और वे जुदियामें रहनेसे यहूदी कहलाते हैं। ये यहूदी प्रगट साधु थे जिन्होंने भारतीय तत्वज्ञानियोंसे आश्चर्यकारक जीवनमें धैर्य, भोजन और संयमकी शक्ति पाई थी। वे वास्तवमें जैन—बौद्ध थे, जिनको बड़े यूनानियोंने सीरिया निवासी भूलसे मान लिया था।

Page. 61—202–193 B C. Riso of Chinise Han dynasty before which say compilers of sui dynasty about .600 A. D., Budhism was unknown in China, so that all prior to 200 B. C was Jaino—Budhism.

भावार्थ—२०२ से १९३ पूर्व जब चीनके हन वंशकी उन्नति हुई, इसके पहले ६०० ई० के करीब के सुई वंशके स्थापक कहते हैं कि चीनमें पहले बौद्ध धर्मको कोई जानता न था। सन् ई० से २०० वर्ष पूर्व वहां जैन-बौद्ध फैला हुआ था।

पाठकोंको विदित होगा कि जैन-बौद्ध तत्वज्ञान एकसा ही है। तथा यह सन् ई० से हजारों वर्ष पहले जानी हुई दुनियामें फैला हुआ था। तथा यहूदी व ईसाई मतपर इसीका प्रभाव पड़ा है।

जैन और बौद्धकी सभ्यताके प्रमाण यह भी हैं कि जहां जैनोंके मुख्य स्थान हैं वहां बौद्धोंके हैं व जहां बौद्धोंके हैं वहां जैनोंके हैं। ऐसे भारतमें बहुतसे स्थान हैं। कुछोंके नाम हैं—

(१) **सारनाथ बनारस**—यह जैन तीर्थंकर १२वें श्रेयांशनाथका जन्मस्थान है, अब भी वहां जैन मंदिर व धर्मशाला स्थापित है। जैन यात्रा करते हैं। ठीक जैन मंदिरके सामने ही बौद्ध स्तूप है व यही वह स्थान है जहां गौतम बुद्धने प्रथम मध्यम मार्गकी शिक्षा दी थी। यहां जो खुदाई हुई है उसमें बौद्ध मूर्तियोंके साथ जैन मूर्ति भी मिली हैं जो वहां स्थापित हैं।

(२) **राजग्रही बिहार**—यहां जैनियोंके मंदिर हैं—पांच पर्वत हैं।

यहां बौद्ध लोग भी दूर२ से दर्शन करने आते हैं। प्राय: जैन मंदिरोंमें स्थापित मूर्तियोंकी भी भक्ति करते हैं।

(३) **श्रावस्ती सहेठ महेठ** जि० गोंडा (बिलरामपुर राज्यमें) यह जैनियोंके तीसरे तीर्थङ्कर संभवनाथका जन्मकल्याणक है। यहां जैनियोंकी मूर्ति निकली हैं जो लखनऊके अजायबघरमें है। यह बौद्धोंका भी मुख्य स्थान रहा है।

(४) **नासिक** (बम्बई प्रांत)–यहां पांडुलेना गुफाएं हैं जिनमें बौद्धोंके स्थान हैं, वहीं एक गुफामें जैन मूर्तियां विराजित हैं।

(५) **एलोरा** (औरंगाबाद, हैदराबाद दक्षिण) की गुफाएं। यहां प्राचीन बौद्ध और जैन गुफाएं साथ२ हैं। दोनोंकी मूर्तियां विराजित हैं।

(६) **तक्षिला** (रावलपिंडी)–यहां बौद्धोंके स्तूप आदि बहुत हैं परन्तु कुछ मंदिरके चिह्न ऐसे मिले हैं जो जैनके विदित होते हैं।

A guide to Taxila by Sir John Marshall (1921)

Page 17—At **Jandial**, a little to the north of Kachcha Kota are two conspicuous mounds, on one of which is a spacious temple dedicated, there is good reason to believe, to fire-worship; and a little beyond these again, another remains of two smaller Stupas which may have been either Jain or Budhist (probably the former.)

भावार्थ–जंडियाला पर कच्चा कोटके कुछ उत्तर दो प्रसिद्ध टीले हैं उनमेंसे एक बड़ा मंदिर बहुतकके अग्नि पूजाका है। उन्हींके कुछ आगे दो छोटे स्तूपोंके भग्नावशेष हैं जो या तो जैन हों या बौद्ध, बहुत करके जैन होने चाहिये।

Sircap city-P.—68 Among these buildings is a spacious apsidal temple of Budhist and several small shrines belong either to Jain or to Budhist.

भावार्थ-सरकैपनगरके मकानोंमें एक विशाल मंदिर वौद्धका है व कई छोटे मंदिर हैं वे या तो जैनके होंगे या वौद्धके।

P-74 In several houses, is a Stupa shrine occupying in each case a court which opens into the high street. The best preserved of these shrines are to be seen in blocks G. & F. both probably of Jain origin. The reason for regarding these Stupas as of Jain rather than Budhist origin is that they closely resemble certain Jain Stupas depicted in reliefs from Mathura.

भावार्थ-कई घरोंके भीतर स्तूप मंदिर हैं जिनमें अंगन है जिसका द्वारा सड़कपर है। उन मंदिरोंमें दो बहुत सुरक्षित हैं। ये दोनों बहुत करके जैनोंके माळूम होते हैं; क्योंकि ये स्तूप मथुरामें पाए गए जैन स्तूपोंसे मिलते हैं। वौद्धोंकी अपेक्षा इनका जैन होना अधिक संभव है। जितना अधिक प्राचीन जैन साहित्य और वौद्ध साहित्यका अध्ययन किया जायगा उतना अधिक दोनोंके मूल सिद्धांतोंमें साम्यता प्रगट होगी। श्वेताम्बर जैनोंका साहित्य जो प्राकृत भाषामें है उसका अध्ययन हम नहीं कर सके हैं। दिगम्बर जैन साहित्यके अध्ययनसे हमने मुकाबला किया है। यदि कोई श्वेताम्बर जैन साहित्यको भले प्रकार पढ़के मुकाबला करेगा तो और विशेष प्रभाव जैन और वौद्धकी एकताका प्रगट होगा। दुनियांके तत्वखोजी जैन और वौद्धकी एकतापर सूक्ष्मतासे मनन कर सकें इसलिये इस पुस्तकको लिखनेका प्रयास किया गया है।

शक्तिके अनुसार विषयका प्रतिपादन ठीक तौरसे किया गया है। यदि कहीं त्रुटि रह गई हो तो विद्वज्जन ठीक करलें व हमें सूचित करें।

सागर सी० पी०
२४-७-३२

ब्रह्मचारी सीतलप्रसाद जैन,
चन्दावाड़ी-सूरत।

नाम पुस्तक जिनके आधारसे यह ग्रन्थ लिखा है—

बौद्ध पुस्तकें ।

1–Budhist wisdom, the mystery of the self by George Grimm Munich, Germany.

(२) मज्झिमनिकाय भयभैरव सुत्त चतुर्थ ।

(३) ,, सति वट्टान सुत्त दसम ।

(४) ,, मूल परिपाय सुत्त प्रथम ।

(५) ,, अरिय परियेसन सुत्त २६ ।

(६) ,, महामुलंद सुत्तं चतुर्थं ६४ ।

7–The word of the Budha by Nana Filika Mahathera Dodundwa (Ceylone) late professor Tokio University.

8–The doctrine of the Budha by George Grimm Germany (1926

9-Same sayings of the Budha, according to pali Canon translated by F. L. Woodward M. A. Cantab. Ceylon (1925)

10–Dhammapada translated by F. Maxmuller sacred book of the East Vol. X (1881)

11–Sutta Nipata translated by G. V. Fanshold (1881)

12–Visudha Maggu of Budha Ghosh translated by P. Maung Tui.

13--Life of Budha by Edward J. Thomas M. A. D. litt. (1927)

14–Sacred book of the East vol. XLIX by F. Max Muller. Budha Charita by Asvaghosha.

(१५) बुद्धचर्या हिन्दी साधु राहुल सांकृत्यायन (वि. सं. १९८८

(१६) संयुक्तनिकाय अवकतसंयुक्त नं० १० ।

(१७) ,, चुंदो (१३)